महिलायें परिवार के साथ साथ विश्व का भी उद्धार करें : राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर) ०७ जुलाई २०१८.

आज ज्ञान सरोवर स्थित हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी संस्था, " महिला प्रभाग " के संयुक्त तत्वावधान में एक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मलेन का मुख्य विषय था - "महिला मूल्य निष्ठ समाज की पथ प्रदर्शक" . इस सम्मलेन में नेपाल सहित भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों से बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया। दीप प्रज्वलित करके सम्मेलन का उदघाटन सम्पन्न हुआ।

ज्ञान सरोवर की निदेशक राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी जी ने इस सम्मेलन का अध्यक्षीय प्रवचन दिया। आपने कहा कि भारत की संस्कृति में आरम्भ से मातृ शक्ति का खास महत्व है। माताओं बहनो में मूल्य है , स्नेहा है ,प्रेम है और त्याग है। वह अपने जीवन को भी अपने बच्चों के लिए न्योछाबर कर देती है। हमारे अंदर की गुप्त शक्तियों को परमात्मा ने पहचाना और माताओं और बहनों को आगे रखा। यह एक विशेषता है यहां की।

माता ही प्रथम गुरु होती है और उसी बीज से बच्चें का संस्कार फलीभूत होता है। हम महिलाओं को अपने घर वालों का उद्धार तो करना ही है मगर अपने समाज और विश्व का भी उद्धार करना है। यह बड़ी भूमिका है हमारी। इस बात को समझ कर और फिर ईश्वर से शक्ति लेकर हम विश्व का कल्याण कर पाएंगे।

तब हम भी सुखी और विश्व भी सुखी। चैरिटी बेगिंस at होम। इस आधार पर घर परिवार का पहले कल्याण करिये। फिर विश्व की ओर। भारत की मातायें जागें और विश्व को जगा दें।

ब्रह्मा कुमारीस महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने उदगार प्रकट किये। आपने कहा कि जिन पुरुषों ने कीर्तिमान स्थापित किये , उन सभी के पीछे नारियों का बलिदान रहा है। अर्थात महिलाओं ने गुप्त रहकर अनेक महान कार्य किये हैं। मगर अफ़सोस यह है की आज तक भी महिलाओं ने मिलकर मूल्यवान संसार का निर्माण नहीं किया है। कहीं न कहीं कुछ कमी भी रह गयी है।

नैतिकता सुन्दर शिक्षाओं को प्रदान करने से नहीं आएगी । माँ अथवा नारियां अपने नैसर्गिक गुणों के कारण मूल्यों को स्थापित कर सकती हैं। लोग घर बार छोड़ कर जंगलों में चले जाते हैं। मगर उससे क्या होगा ?? माँ तो घर में रह कर ही अपने बच्चों को

मूल्यवान बना पाती हैं। बच्चे मात्र पुष्ट रहें यह काफी नहीं है बल्कि उसके विचार भी मूल्यवान रहें - यह अनिवार्य है। त्यागमूर्त माँ अपने आचरण से अपने बच्चों को महान बना सकती हैं।

ब्रह्मा कुमारीस महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी शारदा दीदी ने आज के अवसर पर अपनी बातें कहीं। आपने कहा नारी शक्ति का दूसरा नाम माँ है। माँ , जैसे संस्कार बच्चों में डालना चाहे - डाल सकती हैं। नारियों में अपार शक्तियां हैं। जरूरत है उसको उभारने की। नारी ने हर क्षेत्र में नाम कमाया है। कोई शक नहीं है।
मगर आज नारियों का शोषण बड़े पैमाने पर जारी है। क्यों ??
आपने पूछा कि आज हर प्रकार के सहूलियतों के बावजूद भी क्या जीवन में सुख शांति है ?? नहीं है। क्योंकि नारियों को अपने जीवन में मूल्यों को जागृत करने की जरूरत है। पवित्रता ,शांति ,प्रेम और शक्तियों के जागरण से वह समाज के साथ साथ विश्व को दिशा दे सकती है।

कल्याणी शरण , अध्यक्षा , महिला आयोग झारखण्ड ने आज मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा - मैंने देश के हर राज्य का दौरा किया है। मगर इतना सुन्दर आयोजन यहां ज्ञान सरोवर में ही उपलब्ध हुआ है। नारियों को पथ प्रदर्शक बनाने में ये कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बच्चों को माताएं ही जन्म दे सकती हैं। पुरुष यह कार्य नहीं कर सकते। जब बेटा या बेटी नाम रौशन करता है तो माता का सर गर्व से ऊंचा हो जाता है। जीवन में सब कुछ है मगर शान्ति नहीं है तो जीवन व्यर्थ है। वह शांति यहां से प्राप्त हो रही है। यह अनमोल है। इसको हर कीमत पर प्राप्त कर लेना चाहिए।
अनीता माखीजानी , भारत सरकार में उप निदेशक , महिला और बाल विकास ने भी अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा कि महिलाएं चाहती हैं की हर नर नारायण हो और नारी लक्ष्मी हो तथा बच्चा कान्हा हो। मगर प्रश्न है की ऐसा कैसे होगा ?? आज हर साधन है अपने पास। मगर ऐसी दुनिया अभी बनी नहीं है। कहाँ कमी रह गयी है ?? हमारे जीवन से हर दिन मूल्य दूर होता चला गया है और लगातार होता जा रहा है। अगर हम आध्यात्म को साथ लेकर चलेंगे तो मूल्यवान समाज बन जाएगा। मूल्य तो सभी को चाहिए। सभी महिला चाहती है कि उसका बच्चा मूलयवान हो -गुण सम्पन्न हो।
सबसे पहले मुझे खुद को रोले मॉडल बनना होगा। मैं मूल्यवान बनूंगी तो परिवार भी वैसा हो जाएगा।
श्वेता डागर , अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मान प्राप्त डेंटल सर्जन ने आज के अवसर पर अपनी बातें रखीं। आपने कहा कि मैं आज गौरवान्वित हो रही हूँ इस सभागार में आपको सम्बोधित करते हुए। परमात्मा का शुक्रिया करना चाहती हूँ। आपने बताया की माँ के विचारों से बच्चों का निर्माण होता है। महिलाओं के लिए विज्ञान को अपनाना बढ़िया है मगर आध्यात्म की समझ अगर साथ हो जाये तो वह बज्र सामान बन जाती है। आध्यात्म से निर्भयता आती है जीवन में और वह महिलाओं के लिए अनिवार्य है।

ब्रह्मा कुमारी शीला बहन, नवी मुंबई ने राजयोग का अभ्यास करवाया।
कार्यक्रम के मध्य में संस्थान के महासचिव राजयोगी निर्वैर भाई का सन्देश भी सुनाया गया।

ब्रह्मा कुमारी डॉक्टर सविता ने मंच का संचालन किया। (रपट : **बी के गिरीश** , मीडिया ,ज्ञान सरोवर।)